781। सच्चाई तथा आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना व रक्षा करना धर्म है तथा असत्य व भौतिकवाद की स्थापना तथा रक्षा करना अधर्म है।

782। धर्म की रक्षा करने वाला व्यक्ति कभी भी अधर्म को बढावा नहीं देता तथा अधर्म को बढावा देने वाला व्यक्ति कभी भी धर्म की रक्षा नहीं करता ।

783। गंगाजल में किया स्नान पाप नाश कर देता है धर्म व्यक्ति के अंत:करण को पवित्र बना देता है दुर्गुणों व विकारों को दूर कर देता है ।

784। स्वधर्म का पालन करते हुये राष्ट्र धर्म को नहीं भूलना चाहिये ।

785। वाणी में ही रस है और वाणी में ही विष है । मीठी वाणी से हृदय का सब क्लेश दूर होकर शांति व सुख मिलता है तथा शत्रु भी मित्र हो जाते हैं और कठोर वाणी से हृदय में क्लेश व दुख उत्पन्न होकर अशांति व दूषित वातावरण निर्माण होता है जिससे मित्र भी शत्रु बन जाते हैं । वाणी ही सब कुछ है।

786। वह पुरुष सन्यासी ही है जो गृहस्थ में रहकर भी संयम सदाचार संतोष सेवाभाव व भगवद् भक्ति इत्यादि सद्‌गुणों को अपने निजी जीवन में अपनाता है ।

787। जन्म तथा पुनर्जन्म निश्चित हैं । हर जन्म के साथ साथ कर्म बन्धन हैं , तथा हाथ की रेखाओं पर भाग्य लिखा हुआ है और हर घटना का होना सुनिश्चित है फिर दुख और सुख का आभास क्यों ?

788। आसक्ति सब पापों का केन्द्र बिन्दु है इससे व्यक्ति सब कर्म करने को वाध्य होता है कर्म पूरे न होने पर कोध व अशांति की ज्वाला में जलता रहता है इसका त्याग करने पर ही मनुष्य को परम शांति , सुख व मुक्ति मिल सकती है।

789। अच्छे बंगले , गाडियाँ , घर की साज सज्जा का सब साधन , कुत्ते , नौकर व सब सामान जो किसी और के पास न हो , अपने पास हो , बस इसी भौतिकवाद की दौड में व्यक्ति का बचपन यौवन व बुढापा बीत जाता है अंत में कुछ भी हाथ नहीं लगता , ये शरीर भी यहीं रह जाता है और अज्ञानी व्यक्ति भिखारी की तरह ही रह जाता है । केवल सत्कर्म , पुन्य कर्म तथा हरि स्मरण ही साथ जाते हैं ।

790। हृदय से प्रभु का पावन नाम लेने से , स्मरण व आराधना से मन शुद्ध होता है, तीर्थ य्रात्रा से तो केवल पुण्य मिलता है मन की शांति नहीं मिलती ।

791। मन की अपूर्ण इच्छाओं से शिकायतें व उनसे अशांति उत्पन्न होती है इच्छाओं के त्याग से प्रसन्नता मिलती है यह सब जानते हैं ।

792। सफलता के लिये दृढ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है ।

793। संसार में दो शक्तियों को श्रेष्ठ माना जाता है. , बन्दूक और लेखनी , परन्तु लेखनी के आगे बन्दूक ने हमेशा हार मानी है , लेखनी की हमेशा विजय हुई है।

794। अपने शरीर के किसी अंग का दोष , दृष्टिहीनता आदि तीर्थों में जाने से , गंगा जल से स्नान करने से नहीं मिटती , केवल पापों का नाश हो सकता है।

795। सुखों को ध्यान में रखने वाला सुखी व दुखों को ध्यान में रखने वाला दुखी ही रहता है । उस पर थर्म व मनोविज्ञान दोनों का ही असर होता है।

796। थर्म में आस्था न रखने वाला जीवित भी मृत के समान है , धार्मिक व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुये प्रभु कृपा से तर जाता है , संसार से मुक्ति पाता है ।

797। व्यस्त व्यक्ति का मन प्रसन्न व एकाग्र होता है सदुपयोगी होता है परन्तु अव्यस्त व्यक्ति दुर्गणों का शिकार , चंचल , मिथ्या विचारों वाला व अशान्त होता है ।

798। दूसरों की सेवा करना सर्वोत्तम दान है , किसी का अनिष्ट करना , दुख देना पाप है ।

799। बुद्धि का स्थिर होना ईश्वर प्राप्ति में सहायक है , इन्द्रियां अभ्यास से वश में हो जाती हैं । मार्ग सरल हो जाता है।

800। अहंकार विवेकशून्य होता है तथा पापों व दुर्गुणों का भंडार होता है।

801। निर्धनी का पुत्र ईमानदार, विषयों से रहित, सदाचारी व धार्मिक विचारों से युक्त है तो वह धनी है । और धनी का पुत्र शराबी , दुराचारी व नास्तिक है तो वह अभागा व निर्धन है, वह पुत्र कुलनाशी होगा।

802। धर्म से सद्‌गुणों की उत्पत्ति होती है उस से आत्म शुद्धि होती है , मुक्ति मिलती है ।

803। ईश्वर के आगे मानव शून्य है, लाखों प्राणियों की शारीरिक रचना के अलावा मानव शरीर भी अपने आप में ईश्वर का एक बहुत बडा आविष्कार है जो मानव की पहुंच व निर्माण की कल्पना से बहुत परे है ।

804। भक्तियोग के लिये हृदय से प्रभु का स्मरण कीर्त्तन आवश्यक है, ज्ञानयोग के लिये विवेक व वैराग्य आवश्यक है, दोंनों ही श्रेष्ठ हैं ।

805। प्रभु कृपा और आशीर्वाद के बिना अपना कोई अस्तित्व नहीं है , नास्तिक लोग कितने अज्ञानी हैं जो अपने को ही सब कुछ समझते हैं , जैसे बैलगाडी के नीचे चलने वाला कुत्ता यही सोचता है कि बैलगाडी उसी के बल पर चल रही है।

806। चंचल मन को हृदय से हरि स्मरण से एकाग्र करके संसार से हटाना पडेगा , तभी मन को बस में करके, इन्द्रियों पर विजय पाकर प्रभु को पा सकते हैं अपने को कृतार्थ कर सकते हैं ।

807। आजकल संसार में राजनैतिक लोगों की मानसिकता कितनी गुलाम व कष्टपूर्ण होती है अपनी पार्टी की दोषपूर्ण नीतियां भी अच्छी बताई जाती हैं दूसरी पार्टी की अच्छी नीतियां भी बुरी बताई जाती हैं चाहे वे कितनी भी जनता व देश के लिये हितकारी हों , स्वार्थ प्रियता का ज्वलन्त उदाहरण है।

808। एक जंजीर की सबसे कमजोर कडी ही उसकी सबसे बडी शक्ति होती है उसी प्रकार व्यक्ति की सबसे बडी कमजोरी ही उसके पुरुषार्थ की सबसे बडी शक्ति होती है ।

809। जिन आदर्शों और लक्ष्यों को आप प्राप्त करना चाहते हो उनकी स्पष्ट रूपरेखा तैय्यार करनी होगी और सच्चे मन से प्रभु का नाम लेकर पूरी शक्ति व निष्ठा से जुट जाना होगा , ईश्वर की कृपा तथा आशीर्वाद से सफलता आपके आधीन होगी , इसमें कोई संदेह नहीं ।

810। सरल साधारण निष्छल निष्कपट व्यक्ति जो हृदय से प्रभु का स्मरण करता है शीघ्र ही प्रभु को पा सकता है जबकि अहंकारी व्यक्ति ज्ञानी होने पर भी नहीं पा सकता है।

811। आधुनिक बुद्धिजीवी लोग वर्तमान धर्म को रूढिवादियों की परम्पराओं का जमघट मानते हैं जो आजकल की प्रगतिशीलता में बाधक है वे नहीं जानते थर्म को बंधन में नहीं बांधा जा सकता वह अपने आप में बिल्कुल स्वतंत्र है और हमेशा रहेगा ।

812। अस्वच्छ दर्पण पर प्रकाश की किरणों का कोई प्रभाव नहीं पडता, वैसे ही व्यक्ति के मैले अंत:करण पर सद्‌गुणों व आध्यात्मिक विचारों का कोई प्रभाव नहीं पडता ।

813। दुष्कर्म पवित्र हृदय को प्रभावित नहीं करते सत्कर्म अपवित्र हृदय को प्रभावित नहीं करते ।

814। जिन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया पर शास्त्रों के आदर्शों को व्यक्तिगत जीवन में न अपनाया. ऐसे व्यक्ति विद्वान तो हैं पर प्रभु को नहीं पा सकते ।

815। सुन्दर पुष्पों के खिलने के बाद उनका मुरझाना एक व्यक्ति के युवा होने के बाद उसके करुण अन्त की याद दिलाता है। युवावस्था में वह कितना सुन्दर खुशहाल रहता है पर वृद्ध होकर परब्रह्म परमात्मा का हृदय से आराधनारूपी अमृतपान करके हमेशा के लिये जन्म मरण से छुटकारा पाकर अमर हो जाना चाहता है।

816। संसार में किसी भी देश , जाति , थर्म के व्यक्ति गोरे हैं या काले सभी का खून लाल होता है इसी प्रकार संसार का कोई भी धर्म किसी भी देश या जाति का हो सबका भगवान एक ही होता है वह है एक परम शक्ति जिसे हम परब्रह्म परमात्मा , जिसे दूसरे लोग अपने अपने नाम से पुकारते हैं ।

817। अंत:करण की शुद्धि के लिये जैसे सत्संग भजन कीर्त्तन व हृदय से प्रभु का स्मरण आवश्यक है वैसे ही राष्ट्र का विकास उसकी रक्षा व उन्नति हर नागरिक के हृदय में सच्ची राष्ट्रीय भावना पर व सच्चे त्याग व प्रेम पर निर्भर है ।

818। आत्मा की पवित्रता व उन्नति की जो चिन्ता करता है वह ज्ञानी सब कर्मो को करते हुये भी कर्मो में नहीं बँधता , परमार्थ मार्ग पर चलता हुआ अंत में प्रभु को पा लेता है।

819। एक बीज जब खाद और पानी के सम्पर्क में आता है तो पेड का रूप धारण कर फूल और फल भी देता है ऐसे ही सात्विक प्रकृति का व्यक्ति जब सत्संग कथा और हरि भजन के सम्पर्क में आता है उसे अपने हृदय में धारण कर प्रभु का परम भक्त होकर सबके हृदय में भी भगवान नाम की ज्योति प्रज्वलित करता है।

820। आत्मा को शरीर से अधिक महत्व देने वाला ही सच्चा महात्मा है वह अहं से मुक्त रहता है हृदय पवित्र होने से निर्वाण प्राप्त करता है ।

821। जो भी संकल्पवान व्यक्ति अपने संकल्प के साथ सत्य और ईश्वर को साथ लेकर चलता है सफलता का अधिकारी है ऐसा संकल्पी मनुष्य निश्चय ही उच्च श्रेणी का व प्रभु प्रेमी है ।

822। सज्जन व नेक व्यक्ति दूसरों को कष्ट न देकर स्वयं सब प्रकार के कष्ट उठाने को तैय्यार रहते हैं निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं ,ऐसे व्यक्ति गृहस्थ में रहकर भी सच्चे साधु ही हैं

823। जब एक व्यक्ति के हृदय में चेतनता जागृत होती है वह हर प्राणी व पौधों में चेतनता का अनुभव करता है सब में उसको ईश्वर का ही आभास होता है जब चेतनता अपनी परिपक्व अवस्था में पहुंच जाती है वह मुक्ति पाने का अधिकारी हो जाता है , प्रभु कृपा प्राप्त हो जाती है ।

824। निस्वार्थी व परोपकारी का अंत:करण पवित्र होता है उसमें भाव भक्ति का उदय होता है स्वयं के कल्याण में सहायक होती है तथा नैसर्गिक पवित्र वातावरण निर्मित करती है।

825। आध्यात्मिक शक्ति की सार्थकता तो प्राणीमात्र की निस्वार्थ भाव से सेवा व कल्याण में ही निहित है यदि उस शक्ति का ईर्ष्या द्वेष आदि दुर्गुणों में उपयोग होता है तो वो भौतिकवाद में परिणित हो विनाशकारी होती है।

826। परब्रह्म परमात्मा सर्वव्यापी व सर्वज्ञाता है जो व्यक्ति इस रहस्य को भलिभाँति जानता है वह अपने जीवन के रहस्य को भी जानता है पापों से मुक्त होकर प्रभु को पा लेता है।

827। यह आत्मा अक्षय अजर व अमर है आत्माओं की अखंड सत्ता ईश्वर की देख रेख में ही रहती है । शरीर भौतिक परिधान है जो कर्मो के अनुसार हमेशा बदलता रहता है आत्मा को संजोने वाला अमर व शरीर को संजोने वाला चौरासी लाख परिधानों को ही बदलता रहता है कभी मुक्त नहीं होता ।

828। वर्तमान काल में चलचित्र टीवी पत्रिकाएँ विज्ञापन अश्लीलता का प्रदर्शन करते हैं केवल अपने आर्थिक लाभ के लिये , नहीं सोचते देश की युवा पीढी का भविष्य क्या होगा , धार्मिक व सांस्कृतिक सुधार नहीं कर सकते तो युवा पीढी के साथ अन्याय तो न करें , वातावरण तो दूषित न करें ।

829। परमप्रिय श्रीकृष्ण का बालरूप में जन्म से वसुदेव देवकी नंदबाबा यशोदा मथुरावासी व अन्यत्र सब जगह सब दुखों का अन्त हो गया । बालरूप कृष्ण ने अपनी भव्य शक्ति व लीला से कंस व अन्य राक्षसों की माया से व अत्याचारों से सबको मुक्त कराया तथा सब जगह शांतियुक्त वातावरण का निर्माण किया और अत्याचारों का अन्त किया।

830। विश्व में रहकर संसारी बातों पर ध्यान देंगे तो राग द्वेष बढेगा अहंकार बढेगा पाप बढेंगे , सत्संग करके प्रभु गाथा सुनकर हृदय पवित्र करेंगे तो प्रभु का दिल में वास होगा व संसार से हम मुक्त हो जाएंगे ।

831। सूर्य ग्रहण से दिन में ही पृथ्वी पर अंधेरा छा जाता है प्रकाश का लोप हो जाता है उसी प्रकार माया की काली छाया से हृदय रूपी मंदिर में अंधेरा छा जाता है पर हरि सुमिरन रूपी ज्योति यदि हृदय में है तो माया का पर्दा हट जायेगा मन में प्रकाश हो जायेगा पवित्रता अपने आप ही आ जायेगी ।

832। ऋषि मुनियों तथा महापुरुषों के उच्च आदर्शों की अवहेलना करना धर्म के विरुद्ध है अपने निजी जीवन में अपनाने से अंत:करण ज्योतिर्मय होगा , दूसरों के हृदय में भी प्रज्वलित करने से सब का कल्याण होगा।

833 । अज्ञानी सच्चे अर्थ में धर्म को नहीं जानता केवल ज्ञानी ही धर्म की परिभाषा जानता है ।

834 । एकता से हमारा अस्तित्व व शक्ति बनी रहती है विभाजन से हम शक्तिहीन हो जाते हैं ।

835।सत्यनिष्ठा अपने आप में एक दैवी सम्पदा है जिसके पास भी यह है वह आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत धनी व उन्नतिशील व्यक्ति होता है सब दुर्गुण उसके आगे नतमस्तक हो जाते हैं ।

836। जैसे कटी पतंग कहीं भी जाकर गिर सकती है व्यभिचारी व्यक्ति की मानसिक स्थिति भी ऐसी ही रहती है कहीं भी कुछ भी कर सकता है ।

837। आपत्ति मानव बनाती है दौलत दानव बनाती है ।

838। धार्मिक कामों से ही सच्ची हार्दिक आस्था आ सकती है और प्रभु मिल सकते हैं ।

839। " मुझ में राम तुझ में राम , सब में राम समाया है" जो यह जानता है वह सब कर्म करते हुये भी बंधनमुक्त हो परब्रह्म को पा लेता है ।

840। सतोगुणी पुरुष स्वभाव से सद्‌गुणों को ही धारण करता है सुखी रहता है, तामसी व राजसी दुर्गुणों के कारण कभी सुख नहीं पाता है।

841। अहंकार प्रेम व ज्ञान को नष्ट करके अज्ञान व अविवेक को जन्म देता है उन्हें नष्ट करके हृदय से हरि भजन को अपनाकर अहंकार को दूर कर हृदय में दिव्यता लाओ आत्म शुद्धि होगी प्रभु मिलेंगे ।

842। सुखी व दीर्घायु के लिये अच्छा स्वास्थ्य बहुत आवश्यक है पैसा धनदौलत यश व प्रतिष्ठा काम नहीं आती , निर्वाण और मुक्ति के लिये भी सत्संग भजन और कीर्त्तन आराधना ही काम आते हैं। संसार की मोह माया क्षणिक सुख और भौतिक साधन काम नहीं आते ।

843। मनुष्य जीवन की सार्थकता अपने आप को जानने अत्याचार से लडने व एक स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने में ही है ।

844। हम जो भी पुन्य व पाप कर्म करते हैं उनके फलों को भोगने के लिये ही भगवान हमें मानव शरीर धारण कराता है उन्हीं के फलस्वरूप हमें सुख दुख मिलता है ।

845। हृदय से जो व्यक्ति सबकी भलाई व सुख चाहता है उसके लिये भगवान का भी कृपा हस्त व आशीर्वाद हमेशा उसके साथ साये की तरह रहता है ।

846। जीवन एक अद्भुत आकर्षक तथा मिठास भरी कठिन चुनौती है ।

847। कर्त्तव्यपरायणता की स्वाभाविक इच्छा अपने आप में दैविक सम्पदा होती है जो भी इसका उपयोग करता है वह अपने लक्ष्य को पा लेता है अकर्मण्यता व आलस मानव को भटका देती है ।

848। अच्छी भावनाओं व इच्छाओं का जो आदर करता है अपने निजी जीवन में कार्य रूप में उतारता है उसका जीवन उज्जवल व सफल होता है जो उन्हें नकारता है स्वर्णिम अवसरों को खो देता है व अपना जीवन अंधकारमय बना लेता है ।

849। गीता रामायण भागवत गुरू ग्रन्थ साहिब कुरान व बाइविल सब पवित्र ग्रन्थ हैं अंत:करण से निकली हुई परम शक्ति व परम ब्रह्म परमेश्वर की व महापुरुषों की वाणी ही है जिसका अमृत पान कर व्यक्ति व समाज अपने जीवन को कृतार्थ कर अमर हो जाता है । पवित्र ग्रन्थों की महानता आँकी नहीं जा सकती ये सब मोक्ष देने वाले हैं ।

850। जैसे चिंता की ज्वाला में जल रहे व्यक्ति को कुछ नहीं सुहाता ऐसे ही पिछले जन्मों के पापों के कारण सत्संग कीर्त्तन हरि भजन व्यक्ति को नहीं सुहाते ।

851। जीवन प्रभु द्वारा प्राप्त एक उपहार ही है उसे सहर्ष स्वीकार करें ।

852। क्षमाशील व्यक्ति हमेशा पापों से दूर रहता है अपने अंत:करण को पवित्र रखता है दुर्गुणों से दूर रहता है अपने अपराधों को अक्षम्य समझता है बंधनमुक्त हुआ परम ब्रह्म को पा लेता है ।

853। मानव जीवन का लक्ष्य ईश्वर कृपा व संरक्षण पाना है । शुद्ध भक्ति में उसका रहस्य छिपा है ।

854। अहंकार युक्त भक्ति दंभ की द्योतक होती है विनाशकारी है अहंकार रहित भक्ति विनयशीलता की द्योतक है व मुक्ति दिलाने वाली है ।

855। निस्वार्थ प्रेम भक्ति से आत्मा की शुद्धि होती है मुक्ति मिलती है स्वार्थी भक्ति से व्यक्ति चौरासी लाख योनियों में भटकता रहता है ।

856। वर्तमान काल की शिक्षा केवल जीविका प्राप्त करने का सुख साधन देने वाली है स्वंय को, आत्मा को, ईश्वर को जानने का व निर्वाण प्राप्त करने का अवसर ही नहीं देती ।

857। अपना हृदय ही सुख शाँति व गुणों का भंडार है मानव में खोजने का सामर्थ्य होना चाहिये ।

858। सत्कर्म अपवित्र हृदय को प्रभावित नहीं करते , दुष्कर्म पवित्र हृदय को प्रभावित नहीं करते ।

859। चरित्रहीन अपराधी कितना भी प्रभावशाली हो निजी स्वार्थ के लिये देश व जनता के हित को दाँव पर लगा सकता है चरित्रवान समय आने पर देश व समाज के लिये अपनी जान भी दे देता है ।

860। ईश्वर सर्वव्याप्त हैं परन्तु उनका विशेष स्थान सरल कृतज्ञ करुणामय व विनम्र हृदय में ही होता है ।

861। चरित्र की प्रमाणिकता अच्छे व्यक्तित्व से सिद्ध होती है उसके व्यक्तित्व की आभा प्रत्यक्ष रूप से सामने आती है मणि का प्रकाश अंधेरे में भी छिपाये नहीं छिपता ।

862। किसी जाति व धर्म के होने से पहिले तुम मानव हो मानव होने से पहिले तुम आत्मा हो आत्मा होने से पहिले तुम परब्रह्म परमात्मा के सनातन स्वरूप हो सो अपने को पहचानो और जाति धर्म संसार छोडकर उसी में विलीन हो जाओ।

863। प्राणों का मोह त्यागने में ही वीरता व मुक्ति का रहस्य छिपा हुआ है ।

864। धन लक्ष्मी का रूप होता है उसका सदुपयोग यदि समाज सेवा धार्मिक कार्यों में तथा दूसरों की भलाई में किया जाता है पुण्य देने वाला व फलदायी होता है पर उसका दुरुपयोग देश व समाज का अनिष्ट करने के लिये किया जाये तो अनिष्टकारी व दुखदायी होता है ।

865। अपनी आत्मा को कलुषित करने वाला चौरासी लाख योनियों में रहकर नाना प्रकार की यातनायें सहन कर उसकी कीमत चुकाता है पर पवित्र सुकर्मी मनुष्य संसार से हमेशा के लिये मुक्त रहता है ।

866। अमुक व्यक्ति छोटा अमुक व्यक्ति बडा ये सब इसी दुनियाँ का खेल है आँख बंद होने पर सब बराबर हैं बडप्पन तो अच्छे कर्मो का होता है ।

867। ईश्वर प्रदत्त यह जीवन अद्‌भुत वरदान है इसके सदुपयोग से मानव पापी संसार से तर जाता है ।

868। सत्याचरण में ही मुक्ति है वह शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप व अमृतमय है ।

869। मांसाहारी शराबी जुआरी व्यक्ति की मति भृष्ट हो जाती है अच्छा व्यक्ति भी उसके सम्पर्क में आ जाये तो उसकी भी बुद्धि भृष्ट हो जायेगी ।

870। सरल स्वभाव वाला सदैव संतुष्ट रहता है हर वस्तु उसके लिये प्रभु प्रसाद है मानो दैवी व्यक्ति है उसकी साधु प्रवृत्ति उसकी साधना तपस्या है उसी के प्रभाव से जीवन भर सुखी व शांत चित्त रहता है।

871। सदाचारी जीवन भर दुख क्लेश सहते हुये भी जीवन में सुखी रहता है ।

872। अहंकार कपट झूठ विषमता व लोभ रहित सद्व्यवहार अपने निजी जीवन में अपनायें ,मुक्ति मिलेगी।

873। अहितकारी ज्ञान व्यर्थ है अपूर्ण है केवल दिखावा मात्र ही है।

874। ब्रह्मांड में आत्मा व परमात्मा दोनों ही थे व अनादिकाल तक रहेंगे , अमर हैं शेष सभी नाशवान है।

875। अहंकार नम्रता पर हावी हो जाता है तब व्यक्ति के हृदय की एकाग्रता सुख और शांति समाप्त हो कर हृदय में चंचलता दुख और अशान्ति का राज्य स्थापित हो जाता है ।

876। भजन कीर्त्तन तथा सत्संग का आधार हृदय की विकारों से शुद्धि व भगवद् प्राप्ति है जो केवल सच्ची श्रद्धा व भक्ति से ही सुलभ है ।

877। प्राकृतिक रूप से हिंसक प्राणियों की प्रवृत्ति मांसाहारी होती है अहिंसक शाकाहारी होते हैं पर मानव की स्थिति अलग है मनोवृत्ति की शुद्धि के लिये शाकाहारी ही उसके लिये उपयोगी है ।

878। ईश्वर में हार्दिक आस्था ही हृदय में भक्ति की किरण को जन्म देती है वही भव्य रूप धारण कर मन को पवित्र कर आत्मज्ञान द्वारा ईश्वर को प्राप्त कराती है ।

879। धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन के साथ उनको यदि हम अपने जीवन में उतारें तभी उनकी सार्थकता सिद्ध होगी ।

880। दूसरों को कष्ट देकर जीवन यापन करना तथा स्वंय परिश्रम न करके अपना जीवन निर्वाह करना पाप है।

881। पुष्प का प्रेमी भौंरा होता है जीवन रूपी पुष्प का प्रेम पराग होता है ।

882। आप अपने भाग्य के स्वंय ही निर्माता हैं सद्गुणों को अपनायेंगे तो तर जायेंगे कुसंगति अपनायेंगे तो भ्रष्ट होकर नष्ट हो जायेंगे संसार में ही भटकते रहेंगे ।

883। पाप व पुन्य ही हमारी धरोहर हैं जो मृत्यु के साथ भी साथ जाते हैं शेष सब यहीं रह जाते हैं।

884। जैसे अनजान राही बिना मार्ग दर्शन के भटकता रहता है वैसे ही व्यक्ति बिना सद्गुरू के मार्ग दर्शन के भटकता रहता है ईश्वर को पा नहीं सकता ।

885। हम बूढे लोग तो बस ऐसे दिये हैं कि थोडा ही तेल रह गया है प्रतीक्षा यही है कि धीरे धीरे कब समाप्त हो जाये और जीवन का अन्त कब हो जाये।प्रभु नाम की ज्योति हमें हृदय में जलानी चाहिये जो मृत्यु के बाद भी न बुझे ।

886। जो अपनी बुद्धिमत्ता पर अभिमान करता है वह सबसे बडा अज्ञानी है ।

887। एक अपराधी व्यक्ति जेल में जाने से पहिले अपनी अग्रिम जमानत करा लेता है संसारी व्यक्ति को भी हृदय से सत्संग भजन पूजा तथा आराधना द्वारा ईश्वर को पहचान कर उनके पास अपनी जमानत करा लेनी चाहिये जिससे मृत्यु के बाद नरक में न जाना पडे उनकी शरण मिल जाये ।

888। कोई भी वर्षो जीवित रहने वाला नहीं है मनुष्य यह सोच कर दुनियाँ भर की सम्पत्ति छल कपट व झूठ का सहारा लेकर करता है यदि उसे यह ज्ञान हो कि सब यहीं रह जायेगा मरने पर शरीर भी यहीं रह जायेगा तो वह प्रभु को पाने का प्रयत्न हृदय से करेगा और जन्म बंधन से मुक्त हो जायेगा ।

889। अंत:करण की आवाज अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर का ही पवित्र संकेत है जो अपनी प्रतिभा से जानकर इसका अनुसरण करता है वह सुखी रहता है ।

890। मनुष्य जीवन एक अमृत का प्याला है जो इसका रहस्य जानकर पीता है वह अमर हो जाता है इससे वंचित रहने वाला संसार में ही भटकता रहता है ।

891। क्षमा मन से कीजिये वाणी से नहीं तथा क्षमा मन से माँगिये वाणी से नहीं तभी क्षमा जैसी नैसर्गिक वस्तु के महत्व की सार्थकता सिद्ध होगी तभी उसका प्रभाव हृदय पर अवश्य होगा ।

892। जो नैसर्गिक निष्कपट व सच्चा प्रेम पतंगे का दीपक की लौ के प्रति भौरों का फूलों के प्रति व चातक का चंद्रमा के प्रति होता है वही प्रेम हमारा ईश्वर के लिये होता तो हम ईश्वर की कृपा तथा आशीर्वाद पाने के अधिकारी होंगे निर्वाण को प्राप्त करेंगे इसमें कोई संशय नहीं है ।

893। जो प्रभु की पवित्र स्मृति को अपने मन मंदिर में निरंतर संजो कर रखता है वह स्मृति दिव्य मणि के समान होती है वह महापुरुष जब भी दुराचारी प्रवृत्ति के व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है मणि के प्रकाश से उनके मन के अंधकार को दूर करके उनका उद्धार कर देता है ।

894। इस सुन्दर चमडी के अन्दर जिस प्रकार हाड मांस खून व मल भरा है उसी प्रकार मायारूपी आवरण के अन्दर पाप छल कपट व अहंकार नाना प्रकार की गंदगी भरी है फिर भी इन्हीं में उलझा रहता है परम पावन परमात्मा का हृदय से स्मरण करे तो जन्म मरण के बंधन से छूट जायेगा मुक्ति मिल जायेगी ।

895। दीन दुखियों की हृदय से सेवा करने वाला संत महापुरुष ईश्वर की ही सेवा भक्ति आराधना करता है।

896। एक नन्हें कीडे की भी जान बचाना आदर करना चाहिये उसमें भी ईश्वर का वास व जीवन की सम्पूर्ण प्रकिया होती है ।

897। माता पिता एवं गुरु की सच्चे हृदय से सेवा ही परम भक्ति है परमार्थ को प्रदान करती है ।

898। आत्मा का परमात्मा से संबंध होता है तथा हृदय का शरीर से , प्रथम दैविक व अमर दूसरा सांसारिक होने से क्षणिक व नाशवान होता है ।

899। मैले कुचैले कपडे पहने हुये गरीब से घृणा मत करो उसमें भी दया करुणा व प्रभु का वास होता है ।

900। सद्‌गुणों को धारण कर अपने हृदय को पवित्र करना चाहिये सच्चे प्रेम से ही प्रभु के पवित्र हृदय के पात्र हम बन सकेंगे उन्हें पा सकेंगे ।

901। जन्म से सभी पवित्र होते हैं सत्संग में रहने वाला पवित्र हृदय वाला दुर्जनों के साथ रहने वाला अपवित्र हृदय वाला होता है।

902। हृदय व अंतरात्मा से की गई साधना प्रभु की पूजा व आराधना ही है क्योंकि उसमें कोई स्वार्थ कपट व किसी प्रकार की भी दुर्भावना नहीं होती आत्मा की आवाज स्वर साधना के रूप में व पवित्र होती है।

903। सहजता सरलता व सज्जनता जिस व्यक्ति में है वह कभी असफल नहीं होता है।

904। यदि संसार में रहकर संसार को चाहोगे तो छल कपट झूठ अहंकार लोभ व मोह आदि सब दुर्गुणों का हृदय में वास होगा , परन्तु सच्चाई सेवा भाव भक्ति दया व विनम्रता जैसे सद्‌गुण परम शांति देने वाले हैं ।

905। अनंत कामनाओं से पूर्ण हृदय अपवित्र व विकारों का घर होता है अशांति व अधोगति की ओर ले जाता है कामना रहित हृदय पवित्र होता है मुक्ति की ओर ले जाता है ।

906। वासना रहित हृदय प्रभु का पावन मंदिर होता है देव वास करते हैं वासना युक्त में दानव वास होता है ।

907। ऋषि मुनियों महापुरुषों के कार्यो गुणों का गान करना व्यर्थ है जब तक हम अपने जीवन में उन्हें नहीं उतारेंगे आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई उन्नति न होगी सफलता नहीं मिलेगी ।

908। व्यक्ति का पुरुषार्थ उसके सद्गुणों से आंका जाना चाहिये , यही तर्कसंगत व न्यायपूर्ण है।

909। जो पुरुष सच्चे हृदय से सत्संग भजन से कीर्त्तन से अपने हृदय को पवित्र रखते हैं संसार से तर जाते है।

910। निरंतर हृदय से ईश्वर आराधना करते हुये व्यक्ति के हृदय में चेतना जाग्रत हो जाती है उस चेतना का आभास सब प्राणियों को होता है वही चेतना ईश्वर का दर्शन रूप होती है वह कर्म बंधनों से भी मुक्त हो जाता है और ईश्वर को प्राप्त कर लेता है ।

911। आधुनिक मानव अत्याधुनिक हथियारों की खोज से बहुत प्रसन्न है अपनी उपलब्धि से संतुष्ट है परन्तु जब तृतीय विश्व युद्ध होगा , विश्व में दो शक्तियां आमने सामने खडे होकर इनका उपभोग करेंगी उस समय आंसू बहाने वाला भी कोई नहीं बचेगा सब नष्ट हो जायेगा ।

912। मनुष्य के अन्दर जीवात्मा के रूप में परमात्मा ही व्याप्त है इसी से शरीर के सब अंग मस्तिष्क आदि सब सुचारु रूप से कार्य करते हैं जीवात्मा के लोप होते ही स्थूल शरीर यहीं पडा रह जाता है । इतना सब होते हुये भी अज्ञानी पुरुष यही सोचता है कि वही सब कुछ कर रहा है।

913। बच्चे सरल भोले भाले निश्छल व निष्कपट होते हैं उनका हृदय भी पवित्र होता है अच्छे संस्कार तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिये वही देश भक्त व अच्छे नागरिक बनकर देश का गौरव बढायेंगे।

914। हमें भारत माता की माला के धागे को चरित्रवान देशभक्तों के सुन्दर फूलों से सजाना है जो निस्संकोच समय आने पर अपना जीवन सर्वस्व न्यौछावर कर सकें ,भविष्य में भी भारत माता का ऐसी सुन्दर मालाओं से हमेशा श्रृंगार करते रहें , जिससे हमारी भारत माता पर कोई आंच न आये ।

915। आत्म संतुष्ट व्यक्ति सब विकारों से परे रहता है अपने आप में पूर्ण संतुष्ट व ईश्वर के निकट रहता है।

916। मूर्ख और विद्वान व्यक्ति की संतुष्टि एक दूसरे के विपरीत होती है एक को जिससे सुख दूसरे को उससे दुख मिलता है।

917। जो व्यक्ति कोधाग्नि में जलता हो व कूर व्यक्ति हो वह कभी भी अहिंसा की साधना व रक्षा नहीं कर सकता केवल विनम्र शांतिप्रिय दयालु व साधु प्रवृत्ति वाला ही उसकी रक्षा करने की सामर्थ्य रखता है ।

918। कर्म करना ही श्रेष्ठ है फल की आसक्ति करना व्यर्थ है निष्काम कर्म से ही प्रभु मिलते हैं उद्धार होता है।

919। सांसारिक प्रसाधनों से शरीर की सजावट करना व्यर्थ है कुछ समय में जर्जर होकर नष्ट होने ही वाला है सजाना ही है तो तन के अन्दर मन को सत्संग व हरि भजन से सजाओ ताकि प्रभु के हृदय में स्थान पा सकें ।

920। आत्मसंतोषी एकाग्र मन व इन्द्रियों वाला सांसारिक व्याधियों से बचा रहता है ऐसा व्यक्ति परमशांति पाकर प्रभु को पा लेता है ।

921। दुखी व्यक्ति की सहायता जो भी करता है और उसकी पीडा को समझता है उसके आंसू पोंछता है दिलासा देता है उस व्यक्ति की आत्मा दिव्य है भावनायें पवित्र हैं प्रभु कृपा का पात्र बनने के योग्य है।

922। विषमताओं में भी समता को देखने वाला व्यक्ति ज्ञानी ही है ।

923। महापुरुष व संयासी व्यक्ति हर दम सेवा के लिये तैय्यार रहते हैं भले ही उनका कोई भी तिरस्कार करे वे उसकी भी चिन्ता नहीं करते यही उनकी महानता है ।

924। असत्य का विरोध करने वाला सत्यता का उपासक होता है सत्य का विरोध करने वाला असत्य का उपासक होता है । दैवी सम्पदा केवल सत्य आचरण से ही मिलती है और आसुरी असत्य से ।

925। सांसारिक व शारीरिक व्याधियों को भूलकर प्रभु का चिन्तन मनन करना शास्वत धर्म है।

926। मनमाना आचरण करने वाला ऋषि मुनियों के कथन न सुनने वाला मरने के पश्चात भी सुख नहीं पाता न ही श्रेष्ठ गति उसे मिलती है ।

927। सब की भलाई सोचने वाला परोपकारी निस्वार्थी व परमार्थी होता है केवल अपनी व अपने ही परिवार की भलाई चाहने वाला स्वार्थी मायामय व संसारी व्यक्ति होता है।

928। सांसारिक तत्वों में से धार्मिक तथ्यों को खोज निकालना उनको अपने निजी जीवन में सफलतापूर्वक अपनाना एक ज्ञानी व महापुरुष का ही कार्य है ।

929। प्रेम दया सरलता व करुणा आदि सुन्दर सुन्दर पुष्पों की भावभक्ति रूपी धागे में माला पिरोकर उस परब्रह्म परमात्मा के चरणों मे अर्पण करो ताकि इस पापी नश्वर संसार से छुटकारा पाकर हमेशा के लिये परम शांति व उस परम ब्रह्म परमात्मा को ही पा सकें ।

930। सांसारिक बंधनों को त्याग कर ईश्वर को सर्वस्व मानकर आत्मसमर्पण करना निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करना है ।

931। आध्यात्मिकता हृदय को पवित्र कर मोक्ष दिलाती है भौतिकता हृदय को कलुषित कर नरक दिलाती है ।

932। काल बडे बडे ऋषि मुनियों महापुरुषों राजाओं महाराजाओं सबका जीवन सीमित करके रखता है, किसी का कभी कोई वश नहीं चला , वह सर्वशक्तिमान सर्वश्रेष्ठ है ।

933। समस्त प्राणियों के प्रति जो व्यक्ति हृदय में सहानुभूति व दयादृष्टि रखता है उसे समस्त पुण्यों का फल मिलता है।

934। करुणा दया व परोपकार को निरंतर अपनाने से मानव पूर्णता व प्रभु को प्राप्त कर अमर हो जाता है ।

935। विश्व में धर्म व आध्यात्मिक गुरू सर्वश्रेष्ठ होते हैं दूसरे गुरू तो भौतिकवाद का ज्ञान कराने के कारण संसार में ही उलझे रहते हैं जबकि आध्यात्मिक गुरू आत्मसाक्षात्कार कराकर मुक्ति के मार्ग को प्रदर्शित करते हैं ।

936। पत्थर पर नल के पानी की धारा लगातार पडने से पत्थर में भी गड्ढा हो जाता है उसी प्रकार अतिशय दुराचारी व्यक्ति भगवान का नाम लेने से बाल्मीकि की तरह महान हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है ।

937। परम ब्रह्म परमात्मा के संरक्षण में प्रकृति का हर कदम आधारहीन व अव्यवस्थित नहीं होता है अपितु सैद्धान्तिक नपातुला वैज्ञानिक होता है जिसमें उसके पल पल का हिसाब होता है ।

938। मानव की संतुष्टि को दो भागों में बांटा जा सकता है एक मोह आत्मा दूसरी तृप्त आत्मा संतुष्टि । मोह आत्मा की संतुष्टि वाला व्यक्ति संसारी होता है भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में अपनी आत्मा को संतुष्ट मानता है तृप्त आत्मा वाला अपने आप में ही संतुष्ट रहता है वह अध्यात्मवाद का धनी होता है।

939। यदि आध्यात्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति जो अपने आप में सब प्रकार से व पूर्ण रूप से संतुष्ट हो तो यदि वह प्रभु का हृदय से ध्यान व निरंतर मनन करे तो उसकी कृपा से प्रभु प्रेम का अमरत्व पाकर अमर हो सकता है।

940। विश्व में वह विकासशील व विकसित देश धन्य है जो सच्चे अर्थ में अपनी व विश्व की बेरोजगारी गरीबी चरित्र के निर्माण में व आतंकवाद को समाप्त करने में सहायता करते हैं जो नहीं करते वे दुश्मन हैं।

941। वैराग्य अंत:करण को पवित्र करता है तथा आत्मज्ञान कराकर मुक्ति दिलाता है मोह अंत:करण को अपवित्र कर विकारों का घर बनाता है पापों को बढावा देता है ।

942। धैर्य साहस संयम एकाग्रता विवेक सत्यता और हृदय से प्रभु पर भरोसा यही बुरे व दुख के समय में सच्चे मित्र हैं इनसे शांति व सफलता दोनों मिलते हैं ।

943। अनंत इच्छायें ही मनुष्य के भय और चिन्ताओं का आधार होती हैं इच्छाओं पर विजय पाने से हृदय पवित्र होकर परम शांति प्राप्त करता है ।

944। मन की शक्ति का सार्थक उपयोग तभी होता है जब जीवन नियमित संयमशीलता सज्जनता व ईमानदारी से परिपूर्ण हो अन्यथा उसका दुरुपयोग होता है।

945। यदि विश्व में शांति सच्चाई धर्म व मानवता की रक्षा करनी है तो निश्चित रूप से पूरे आतंकवाद को समूल नष्ट करना होगा तभी निर्दोष लोगों की हत्यायें रोकी जा सकेंगी तथा उनकी जान माल की रक्षा हो सकेगी।अन्यथा पूरा विश्व विकराल आतंकवाद की चपेट में होगा।

946। आज के विश्व में यदि कोई कुरुप या काला हो उसे समाज कोई आदर नहीं देता उसकी उन्नति के सारे द्वार बंद हो जाते हैं । सुन्दर सुडौल व्यक्ति का सब आदर करते हैं सिर आंखों पर बिठाते हैं जिससे उसके भाग्य के सब दरवाजे खुल जाते हैं प्रख्यात हो जाता है अन्दर से कैसा भी हो ।

947। लालच मन में अशांति बढाकर सब दुर्गुणों को जन्म देता है मन की शांति व पवित्रता नष्ट हो जाती है ।

948। ईश्वर ने हमको जो शक्ति विद्वता व सामर्थ्य दिया है उसका हमारे द्वारा दुरुपयोग करना अप्राकृतिक है यदि उसका उपयोग हम निस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई के लिये करेंगे तो प्रकृति उसका किसी भी माध्यम से अवश्य फल देगी यह प्रकृति का नियम है ।

949। हृदय से हृदय का संबंध स्वार्थ पूर्ण नहीं होता परन्तु त्याग भक्ति व प्रार्थना का रूप होता है जिसमें प्रभु का वास होता है ।

950। अज्ञान अश्रद्धा आसक्ति व संशय ये चार मानव के बडे शत्रु हैं जो अधोगति की ओर ले जाते हैं इनका त्याग परमार्थ को प्राप्त करायेगा मानव पवित्र हो जायेगा ।

951। पवित्र मन वही है जो सद्‌विचारों से व प्रभु के स्मरण से युक्त हो, पवित्र तन वही है जो प्रभु की सेवा व निस्वार्थ भाव से जनसेवा में व्यस्त हो, तथा पवित्र धन वही है जो सर्वजनहित पर उपकार तथा प्रभु की सेवा में उपयुक्त किया जाय ।

952। मानव का मिट्टी से अटूट संबध है जन्म से मरण तक ही जीवन है शेष तो मिट्टी में ही वास है । यह सच्चा ज्ञान यदि हो जाये तो मानव का सब अहंकार दूर होकर वैराग्य की भावना उत्पन्न होकर उस परमात्मा को प्राप्त कर अमर हो जाओगे मिट्टी में बार बार नहीं मिलना पडेगा।

953। संसार की सब भौतिक वस्तुयें जैसे मानव जीवन यौवन स्त्री पुत्र व धन सब अस्थिर हैं अध्यात्मवाद तथा धर्म यश कीर्ति आदि सब स्थाई हैं ।

954। गुरू का स्थान भगवान से भी ऊंचा बताया है भगवान तो मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही फल देते हैं परन्तु गुरू तो मनुष्य की संसार से सब आसक्ति समाप्त कर हृदय में ज्ञान की ज्योति जला देते हैं परमार्थ का ज्ञान कराते हैं और मानव अच्छे कर्मों को अपनाकर संसार से तर जाता है ।

955। परिश्रम द्वारा पवित्र साधनों व सच्चाई को साथ लेकर जो सम्पत्ति कमाई जाती है उससे बुद्धि व आचरण शुद्ध होता है तथा पीढी दर पीढी शांति देने वाला सुखकारी होता है झूठ व कुटिलता से कमाया गया धन कुटुम्ब के लिये विनाशकारी होता है ।

956। निस्वार्थ भाव से सच्चे प्रेम की पराकाष्ठा में ही भक्ति योग व त्याग का मर्म छिपा है ।

957। भक्ति मार्ग द्वारा प्रभु को पाने के लिये सभी दुर्गुणों का नाश करना होगा ।

958। निस्वार्थ भाव से मानव सेवा व मानव प्रेम सबसे बडा धर्म है ।

959। मन वाणी और कर्म से प्राणीमात्र की सेवा करना साधु पुरुषों का सनातन धर्म है।

960। निस्वार्थ प्रेम की पराकाष्ठा हृदय में पवित्रता की ज्योति जलाकर ईश्वरी अनुभूति कराती है आत्मज्ञान द्वारा प्रभु का साक्षात्कार कराती है ।

961। हृदय की निर्मलता प्रेम दया व सत्यता की द्योतक होती है तथा हृदय की अपवित्रता क्रोध अहंकार व असत्यता की द्योतक होती है ।

962। आलस व अकर्मण्यता सम्पूर्ण जीवन की उन्नति को अवरुद्ध कर जीवन को नीरस बनाकर पशु जैसा जीवन व्यतीत करने पर बाध्य कर देती है।

963। धर्म की महत्ता उसके आचरण में ही निहित है।वही उसका प्रारूप भी है ।

964 । तामसी लोगों का कोध पत्थर पर लकीर जैसा होता है जन्म जन्मान्तर तक चलता है, राजसी लोगों का कोध मिट्टी पर लकीर जैसा होता है कुछ समय तक रहता ही है सात्विक लोगों का कोध बालू पर लकीर जैसा होता है जो कुछ ही समय में दूर हो जाता है परन्तु जो साधु संत भगवद् मार्गी है विकाररहित है उसका कोध पानी पर लकीर जैसा होता है साथ ही साथ समाप्त हो जाता है एक दम पवित्र होता है ।

965 । पर निंदा से दूर रहो दुर्गुणों को त्याग कर सद्गुणों को धारण करो निराश्रितों की सेवा करो तथा प्रभु का हृदय से चिंतन करते रहो यही सच्चे धर्म व परमार्थ का मर्म है।